बने हुए भवनों में वास्तु दोष के निवारण हेतु पिरामीड

किसी जगह के वास्तु दोष का तीन तरीकों से निवारण किया जा सकता है। एक तरीका तो यह है कि दोषग्रस्त भाग को तोड़कर हटा दिया जाये और सही जगह पर नया निर्माण किया जाये। उदाहरण के लिए अगर किसी भवन के उत्तर-पूर्व मे सीढ़ी है तो उसे तोड़ डालना चाहिए और दक्षिण - पश्चिम में नयी सीढ़ी का निर्माण कराना चाहिए। लेकिन वास्तु के अनुसार जहां निर्माण होना है, वहां जगह भी तो होनी चाहिए। इसी प्रकार अगर उत्तर-पूर्व में टॉयलेट है तो इसे तोड़कर पूर्व या उत्तर - पश्चिम में नया टॉयलेट बनाना चाहिए। निःसंदेह यह सर्वोत्तम तरीका है और किसी वास्तु विशेषज्ञ की पहली सलाह भी यही होगी। यह वास्तु शास्त्र के सिद्धांतों के पूर्णतः अनुरूप है।

दूसरा तरीका है आध्यात्मिक तरीका। इसमे पूजा-पाठ, यज्ञ, हवन और सही जगह पर देवता की प्रतिमा रखकर वास्तु दोष दूर किया जाता है। इस तरीके से मन को शांति जरूर मिल सकती है लेकिन वास्तु दोष पूरी तरह दूर नहीं हो सकता। मूर्तियों की स्थापना मात्र से घर में रहने वालों के जीवन में खुशियां नहीं आ सकती। अगर ऐसा होता, तो कोई समस्या ही नहीं होती।

तीसरा और सबसे ज्यादा असरदायक और कम खर्चीला

तरीका है अप्रत्यक्ष तरीका। इस तरीके से भवन में बिना तोड़फोड़ किये वास्तु दोष को दूर किया जाता है। इस तरीके में पिरामीड, रत्न, पत्थर, तांबे की छड़ों , ओरेगन, रसायनों ,एनर्जी प्लेट आदि का इस्तेमाल किया जाता है। इनमें अपने आसपास उच्च ऊर्जा प्रवाहित करने की क्षमता होती है।जहां तोड़फोड़ संभव नहीं हो या बहुत खर्चीला हो, वहां यह तीसरा तरीका सबसे लाभदायक होता है। लेकिन इसका फैसला भवन को सही ढंग से देख परख कर ही किया जाना चाहिए। यह फैसला फोन पर या ईमेल से नहीं हो सकता।

वास्तु दोष निवारण में पिरामीडों के उपयोग का मूल सिद्धांत है अप्रत्यक्ष सीमाओं का निर्माण। अगर दक्षिण-पश्चिम मे शौचालय है तो इस दोष के निवरण के लिए पिरामीडों का उपयेाग कर मुख्य भवन और शौचालय के बीच अप्रत्यक्ष दीवार बनायी जाती है। इसके कारण दोनों के बीच सीमा निर्धारित हो जाने से दोष दूर हो जाता है।

वास्तु शास्त्र के अनुसार किसी भी घर में अगर बालकनी है तो उसे सिर्फ उत्तर और पूर्व दिशा में होना चाहिए। परंपरागत वास्तु के अनुसार अगर दक्षिण-पश्चिम में बालकनी है तो उसे बंद कर देना चाहिए और उसका उपयोग नहीं करना चाहिए। अप्रत्यक्ष विधि से कमरे और बालकनी के बीच एक कल्पित सीमा बनायी जाती है। इसके

लिए पर्याप्त एवं उचित संख्या में पिरामीडों का इस्तेमाल किया जाता है ताकि बालकनी से आने वाली नकारात्मक ऊर्जा कमरे मे प्रवेश न कर सके। वास्तु के अनुसार रसोईघर और बाथरूम का दरवाजा आमने-सामने नहीं होना चाहिए। लेकिन अगर ऐसा निर्माण हो ही गया है और तोड़ना संभव नहीं है तो इस दोष को दूर करने के लिए छत में पिरामीड स्थापित कर अप्रत्यक्ष दीवार बनाया जाता है। इस अप्रत्यक्ष दीवार से वास्तु दोष का प्रभाव काफी हद तक दूर हो जाता है।

घर का दक्षिण-पश्चिम कोना सीधे कोण पर होना चाहिए। अगर ऐसा नहीं है तो इसमें संशोधन करना होगा। पिरामीडों का उपयोग कर सही कोण बनाया जा सकता है और दोष का निवारण किया जा सकता है।

वीथि शूल नामक दोष का भी पिरामीड से निवारण किया जा सकता है। उत्तर पूर्व को छोड़कर और कहीं से भी उत्पन्न हो रहा वीथि शूल घर में रहने वालों के लिए अच्छा नहीं होता। घर के प्रवेश द्वार और घर के सामने की सड़क के बीच एक अप्रत्यक्ष दीवार का निर्माण पिरामीडों की मदद से किया जाता है ताकि घर के सदस्यों को वास्तु दोष से नुकसान न हो सके। इसी तरह भवन के अन्य दोष भी पिरामीडों के समुचित उपयोग से दूर किये जा सकते हैं। लेकिन यह

काम कोई विशेषज्ञ ही कर सकता है।

लेखक इंजीनियर हैं और सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम में उच्चाधिकारी रह चुके हैं। फिलहाल वे भूदोष वास्तु सलाहकार के रूप में हैदराबाद में रह रहे हैं। उनसे www.karmicvastu.com या उनके मोबाइल नम्बर 099893-00733 पर संपर्क किया जा सकता है।